शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल

सूर्यबाला के कथा साहित्य में नारी संवेदना

संगीता राणा (शोधार्थी)
सुरेश सरोठिया (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र 'सूर्यबाला की कहानियों में नारी संवेदना' के अन्तर्गत विभिन्न बिन्दुओं - परम्पराओं में जकड़ी नारी , नारी आदर्श और यथार्थ के द्वन्द में उलझी नारी, आधुनिक और परम्परावादी मूल्यों में संघर्षरत नारी, आधुनिक नारी के विविध रूप, वर्तमान युग की समस्याओं में जूझती नारी पर प्रकाश डाला गया। 'सूर्यबाला की कहानियों में सामाजिक, नैतिक मूल्य' के अंतर्गत पारिवारिक विघटन, संयुक्त परिवार, एकल परिवार, महानगरीय बोध, स्त्री पुरूष संबंध, वर्गभेद, रूढ़ियाँ एवं परम्पराएँ, मध्यम वर्गीय सामाजिक जीवन, मानवीय संस्कारों का चित्रण, और दाम्पत्य जीवन का चित्रण का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

सृष्टि में मनुष्य ने जब से बोलना सीखा है, इसी के साथ उसने कहानी सुनना तथा कहना भी सीखा है। मनुष्य के रहस्य पूर्ण हृदय में दूसरों को जानने और अपने-अपने आत्मकथ्य को अभिव्यक्त करने की उत्सुकता ने ही 'कहानी' को जन्म दिया है। कहानी तो कालजयी है, अपने युग की संचेतना को सजीव रूप में अत्यन्त ही करूण स्वर में मुखरित करने की, सृष्टि के आदि से चलने वाली यह प्रक्रिया सृष्टि के अन्त तक सतत् एवं निरन्तर चलती रहेगी।

सूर्यबाला जी ने अपने साहित्य में अध्यात्म की सीमा रेखाओं को स्पर्श करते हुए सभी में एक प्रकार का तेवर लेकर कदम रखा है। उनके दाम्पत्य जीवन, सीमा रेखाओं के बीच घूमते है। दिशाहीन, एक इंद्र धनुष जुबेदा के नाम, मुन्डेर पर, थालीभर चाँद तथा गृह प्रवेश आदि उनकी कथा प्रकाशित है। सूर्यबाला जी की कहानी उन मानवीय संस्कारों के आधारों पर हैं, जो छोटे-छोटे निजी स्वार्थ के कारण अपना बहुमूल्य व्यक्तित्व खोकर बोने बन जाते है। रूख होगी, जय होगी, जय है, पुरूषोत्तम नवीन, एच्छ मिलाप, बहुजी और बंदर आदि कहानियों में संबंधों के खोखलेपन के साथ स्वार्थ की संकीर्ण दरारों का यथार्थ भी मिलता है तथा परम्पराओं, आदर्श यथार्थ के द्वन्द, वर्तमान युग की समस्याओं में जूझती नारी, दाम्पत्य जीवन संस्कारों व नारी उत्पीड़न आदि का प्रत्यक्ष रूप से भावों को व्यक्त करते हुए प्रस्तुत किया गया है। सूर्यबाला जी की कहानियों में मध्यवर्गीय आदमी की उस मनःस्थिति को लेकर चित्रण किया जिसमें वह न तो पूरी तरह से संस्कारों से बंधा है और न पूरी तरह से त्याग पाता है।

व्यक्तित्व एवं रचनात्मकता

समकालीन कथा साहित्य में सूर्यबाला जी का लेखन अपनी विशिष्ट भूमिका और महत्व रखता

है। पिछले तीन दशकों से हिन्दी साहित्य में कहानी, उपन्यास और हास्य व्यंग्य के क्षेत्र में सुपरिचित नाम सूर्यबाला जी का आता है। किसी भी रचनाकार या साहित्यकार के व्यक्तित्व की जानकारी हमें दो प्रकार से प्राप्त हो सकती है-

1. आन्तरिक व्यक्त्वि 2. बाहय व्यक्तित्व

कार्य का प्रारम्भ आर्य महिला विद्यालय से। 1972 में पहली कहानी सारिका में प्रकाशित। 1975 में बंबई आने के बाद लेखन में विशेष प्रगति।1975 में प्रकाशित पहला उपन्यास मेरे संधिपत्र विशेष रूप से चर्चित। डॉ. सूर्यबाला ने अभी तक 150 से अधिक कहानियां, उपन्यास व हास्य व्यंग्य लिखे हैं। इनमें से अधिकांश हिंदी की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। अनेक रचनाएँ आकाशवाणी व दूरदर्शन पर प्रसारित हुई हैं और अनेक रचनाएँ कक्षा आठ से लेकर स्नातक व स्नाकोत्तर स्तर तक के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं।

सूर्यबाला का जन्म 25 अक्तूबर 1943 को वाराणसी में हुआ। आर्य महिला विद्यालय से स्नातक स्तर तक की शिक्षा हासिल की। उन्होंने काशी विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में 'रीति काव्य' में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। घर परिवार में पढ़ने-लिखने, कला संगीत का सुरुचिपूर्ण वातावरण ने सूर्यबाला के व्यक्तित्व को बनाया।

साहित्य साधना

सूर्यबाला की रचना यात्रा संवेदना-से-संवेदना तक की अंत यात्रा है। उनके द्वारा रचित 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम', 'दिशाहीन मैं', 'थाली भर चाँद', मुँडेर पर, गृह प्रवेश', 'साँझवती', 'कात्यायनी संवाद','मानुष गंध',' गौरा गुनवंती' आदि कहानी - संग्रहों और 'मेरे संधिपत्र', 'अग्निपंखी','सुबह के इंतजार तक', 'यामिनी-कथा','दीक्षांत'सरीखे उपन्यासों में केन्द्रस्थ संवेदनशीलता उन्हें पाठकों के दुख-सुख और राग-विराग से सीधे जोड़ सकी है। उनकी स्वीकृति है कि उन्हें 'मानवीय संबंधों की बड़ी उष्मा भरी विरासत मिली है और शायद यही कारण है कि 'मानुष गंध' से सुवासित उनकी रचनाएँ किसी तीक्ष्ण संवेदनात्मक अनुभव से शुरू होकर किसी किसी महत्तर संवेदना के उद्रेक के साथ अपना दायित्व-निर्वाह करती हैं। ईमानदार युगबोध और सकारात्मक मूल्यबोध की उपस्थिति इन रचनाओं को वैचारिक ऊर्जा की दीप्ती प्रदान करती हैं। वाजिब चिंताएँ और सरोकार उनकी रचनाशीलता को बहुआयामी बनाते हैं, इसीलिए वे किसी विमर्श-विशेष तक सीमित रचनाकार नहीं मानी जाती हैं।

अपने एक 'आत्मकथ्य' में सूर्यबाला ने लिखा है- 'मेरे लेखन का एकमात्र लक्ष्य आदमी की सीप में आत्मीयता का मोती सुरक्षित बचा लेना होता है, क्योंकि यह समय बड़ी क्रूरता से मानवीय संवेदना-को बंजर करता जा रहा है। अतः जहाँ भी उन्हें मानुषगंध महसूस होती है, वे पूरी रचनात्मक ईमानदारी के साथ उसे सहज लेती हैं।

सूर्यबाला के साहित्य में स्त्री विमर्श

सूर्यबाला ने समय-समय पर बाद में स्त्री-विमर्श, स्त्री मुक्ति के दावों पर और 'मुक्त' स्त्री पर अपनी राय दी हैं। सूर्यबाला 'स्त्री-विमर्श' या उसके नाम से हिन्दी में प्रचलित लेखन की सरासर विरोधी हैं। ज्ञान चतुर्वेदी ने जब पूछा कि क्या स्त्री-विमर्श एक धोखा, एक आंदोलन, एक फतवा या कुछ और है तो उनके विशेषणों से सहमत होते हुए सूर्यबाला आगे कहती हैं "...यानी विमर्श को छोडकर सब कुछ। एक बहती गंगा जो बहुतों को तार गई, सबको कुल्ला-दातुन करने और नहाने-धोने की खुली छूट दे गई। कहानी की

शीर्षस्थ पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्य के बाजार का सबसे अहम, सबसे सेलेबस मुद्दा नारी-सर्वाधिक विचारणीय पक्ष सेक्स, जैसे अब जमाने में कोई दूसरी समस्या रही ही नहीं। रचनाओं से लेकर आख्यानों तक के केन्द्र में मात्र देह। इन्ही मुद्दों, इन्हीं पक्षों पर समाज वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, स्त्री-पुरूष संबंधों को लेते हुए बहुत गहराई तक जाने की गुंजाइश होने के बावजूद, चर्चाओं का रुख कुछ इस तरह का होता है जैसे स्त्री गर्दन के ऊपर कुछ है ही नहीं। कुल मिलाकर स्त्री विमर्श को साहित्य कोई संस्कार दे ही नहीं पाया। उसी तरह से स्त्री-चेतना और स्त्री सामथ्र्य के संदर्भ में सूर्यबाला आज की मुक्त चैतन्य नारी सफलताओं से संतुष्ट नहीं हैं। 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका के अगस्त के अंक में 'मेरे प्रतिरोध' शीर्षक आलेख में वे कहती हैं, "मुझे लगता है, स्त्री मुक्त तो हुई, आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर भी, ढेर सारे अवरोध पार किए हैं उसने उपलब्धियों की खासी लंबी लिस्ट है उसके पास...। लेकिन उतनी लंबी लिस्ट शायद उसके नुकसानों की भी हैं। उसने जितना पाया, उससे कम नहीं खोया। और इस खोए हुए की सूची में मनुष्यत्व की वे अनमोल विरासतें और दुर्लभ गुण हैं जो स्त्री मात्र 'संपूर्ण स्त्री' नहीं बल्कि 'पूर्ण मनुष्य' बनाते हैं, जो हर देशकाल में स्वीकृत है।

सूर्यबाला की कहानियों का विवेचन

1 थाली भर चाँद- (कहानी संग्रह)

रमन की चाची-इस कहानी में बहुत ही सीधी सीधी 'रमन की चाची' के जीवन की करूण व्यथा की गाथा है। वह कभी किसी को पलटकर जवाब नही देती है। उसके परिवार की अन्य स्त्रियाँ उसे ताने देती रहती है और वह अमुक सी सुनती रहती और बिना किसी शिकायत के अपना काम करती रहती। वह कभी भी साज श्रृंगार नहीं करती और न ही कभी नये कपड़े या साड़ियाँ ही । वही फटी पुरानी-सी साडी। उस पर अत्याचार पर अत्याचार होते, परन्तु उसका पति उसके दर्द को बांटता नही था। वह तो उलटे अपनी पत्नी का जडबुद्धि, जाहिल समझता और कहता है कि औरतें ऐसे ही रखी जाती हैं- इसमें बुराई क्या है।

पड़ाव - सूर्यबाला जी ने इस कहानी के माध्यम से किसी के द्वारा किसी रिश्ते का मजाक या उनकी भावनाओं के साथ छल की अभिव्यक्ति की है। यह कहानी एक बूढ़े दम्पति की कोमल भावनाओं, सहृदयता का तथा एक रिश्ते के साथ खिलवाड़ जो कि एक पढे लिखे तथा शहरी दम्पति शैलेन्द्र तथा मीना ने किया। 'संताप' कहानी के सम्बन्ध में सूर्यबाला जी के शब्दों में, "असली कहानी नही 'सच' इस कहानी से कही ज्यादा दारूण और लोम हर्षक था। मैंने तो उस समूचे माहौल के बीच महसूसी एक करूण छटपटाहट को शब्दों में बांधने की कोशिश की है। यह कहानी उस माँ की संवेदना की है, जिसके दो-दो बच्चे एक साथ मौत के घाट उतर गये हैं। और दूसरी स्त्री ने अपने किशोर बेटी और पति खोया। एक परिवार में एक साथ स्त्री चार-चार मौते। उस माँ ने तो जीवन की समूची आस्था बच्चों के साथ ही जोड रखी थी। उसके बच्चे उसके जीवन की चरम उपलब्धि थे। उसकी सुध-बुध उसे रही ही नही, उसने तो अपनी सारी महत्त्वाकांक्षाएँ अपने बच्चों में ही रोप रखी थी। सभी औरतें तरह-तरह की बातें करती हैं। यहाँ तक कि उसका पति भी उसे सांत्वना के रूप में या यूँ कहे कि सांत्वना के बजाय उसे कहता है कि "तकदीर ने साथ दिया तो बच्चे तो और हो जायेगे और ईश्वर ने चाहा तो इस बार अपाहिज नहीं पूरे स्वस्थ...। सिर्फ मैं- 'सिर्फ मैं' कहानी के

माध्यम से सूर्यबाला जी ने व्यक्ति के 'स्व' को समझने की कोशिश की है। व्यक्ति अपने स्व में लिप्त होता जा रहा है। दूसरों के सुख-दुःख महसूस करने से कतराते हैं। सिर्फ वह तेजी से नई पीढ़ी पर हावी होता जा रहा है, इसे हम नकार नही सकते। थाली भर चाँद - यह कहानी उस परिवेश से सम्बन्धित है, जो अविकसित है। एक झाड-झंखाड से भरे कस्बे में तीन नन्ही परियां बडी सहजता से बिना किसी परेशानी के अपना काम करती है। दूसरी ओर सभ्य सुसंस्कृत पढे लिखे लोग। जो उन्हें देखकर भी अपने आप में अधूरा महसूस करते हैं।

2 एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम

व्यभिचार - यह शुद्ध मानसिक कहानी है, जिसमें सबकुछ मन के अन्दर ही अन्दर घटता चला जाता है, बाह्य परिस्थितियाँ माध्यम मात्र है। 'अविभाज्य' कहानी के नारी और पुरूष पात्र अतीत से जुडे रहकर अपनी मानसिकता का आधार खोजते हैं। यही खोज उन्हें दूसरे के करीब बनाये हुए है। 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम' कहानी के माता-पिता को नई पीढ़ी ने नही, उसके आर्थिक तनावों की मजबूरियों ने निरीह बनाया है। मुख्यतः एक माहौल की कहानी है। इसमें एक पिता का दर्द तंगहाली की लाचारी ने उभारा और बढ़ाया है। 'रेस' कहानी में सूर्यबाला जी ने आज की अंधी दौड़ का चित्रण किया है, कि कैसे आम आदमी जिन्दगी की रेस में हारता या जीतता है। सफलता के पीछे भागते और खत्म होते मनुष्य की यह 'रेस' कहानी है।

3 दिशाहीन

इस कहानी संग्रह में कुल नौ कहानियाँ हैं। सूर्यबाला जी ने पात्रों के माध्यम से संवेदनाओं, भावनाओं, मन की आंतरिक कुंठाओं, द्वंद्व का चित्रण किया है। 'मेरा विद्रोह' में एक बालक की कहानी है, जो अपने आप में विद्रोही, उद्दंड और ढीठ है। उसके पिताजी की और उसकी बिल्कुल भी नहीं बनती। उसकी माँ उन दोनों के बीच पिसती चली जाती है। 'कतारबंध स्वीकृतियाँ' कहानी सिस्टर एंसी के भीतर के मानसिक अंतर्द्वंद्व की कहानी है। वह प्रभु के प्रति समर्पित व आस्थावान है। 'गुजरती हदें' सूर्यबाला कृत दिशाहीन कहानी संग्रह की तीसरी कहानी है। इसमें विनय विदेश से दस साल बाद वापस आपने जन्म स्थान पर आता है। रास्ते में उसकी पुरानी याद ताजा होती जाती है। 'पुल टूटते हुए' कहानी में नारी मन की आंतरिक भावनाओं को सूर्यबाला जी ने अपनी लेखनी से उकेरा है। इस कहानी की नायिका माया एक चित्रकार है। वह एक बोल्ड व बेबाक लड़की की तरह, जिसे तकिए पर सिसकती अंसूआती पालतू जिन्दगी से चिढ है। एकदम अपनी मरजी की सूझती सपाट जिन्दगी, खाने-पीने सोने जागने किसी भी बात के लिये कोई बंदिश नहीं। 'घटना' कहानी एक बहुत ही गरीब व तंगहाल पिता की कहानी है जो आम आदमी की जरूरतों को चाह कर भी पूरा नही कर सकता। वह किसी ठेकेदार के अधीनस्थ काम करता है, किन्तु वह बीच में ही छूट जाता है। ऐसा कई बार होता है। एक बार छूटने पर बड़े बेटे दीपू की पढाई छूट गई थी लेकिन उसका नाम वापस स्कूल में लिखवाने से उसके चेहरे पर चमक आ जाती है। किन्तु बीच में ही उसके पिताजी का काम छूट जाता है। वह पार्क में टाइम पास करके वापस घर चला जाता है। उसके दिमाग में उलटे-सीधे सवाल आते-जाते हैं। 'कंगाल' कहानी में गरीब जन की व्यथा का वर्णन किया गया है। महिला के पास पूंजी का अभाव होने के कारण वह अपने कपड़े फट जाने पर खुद अपने हाथों से सी लेती है। वह अपने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मन के भावों को मन की मन मे रखती हुई, हृदय पीड़ा में जलती हुई, गुमसुम सी रहती है आदि भावों को व्यक्त किया गया है। 'इसके सिवा' कहानी में आधुनिक युग की अनेक प्रकार की व्यवस्था रहते हुए व्यक्ति अपने परिवार से ठीक तरह से अपने पति-पत्नी एवं बच्चों के बीच प्यार, स्नेह नही जुटा पाता हैं। अंत में वह अपने परिवार के बारे में सोचता है तो उस समय सब कुछ छिन्न-भिन्न हो जाता है। 'दिशाहीन' कहानी में लेखिका ने वर्तमान शिक्षा पर प्रश्नचिह्न लगाया है, जिसमें विद्यार्थी विद्या अध्ययन करने के बजाय घूमना-फिरना, मौज-मस्ती करना, फिल्म देखने जाना आदि कार्य करता रहता है, इस प्रकार और भी भावों को व्यक्त किया गया है। 'सिंड्रेला का स्वप्न' कहानी में लेखिका ने एक स्त्री पर हो रहे अन्याय, जाति-पाति, छुआछूत, अंधविश्वास, पाखंड, रूढिवादी आदि पर तीखा प्रहार किया है, वह चाहती है कि बस बहुत हो चुका, जो मानव, मानव की इन समस्याओं के झूठे-ढकोसलेपन को कब तक आगे बढायेगा। 'गृह प्रवेश' कहानी आर्थिक दबाव में अनचाहे समझौतों की विवशता का आख्यान है। 'अनाम लहरों' के नाम कहानी में मध्यवर्गीय संकुचित मनोवृति, स्वार्थपरता, संवेदन शून्यता, अमानवीय अवसरवादिता आदि के चित्रण के साथ नई पीढ़ी पर उसके प्रभावों का रेखांकन है।

निष्कर्ष

सूर्यबाला के व्यक्तित्व का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उन्होंने नारी पर होने वाले अत्याचारों को होते हुए देखा, महसूस किया व उन्होंने खुद सहा है, लेकिन सूर्यबाला ने इन्हीं समस्याओं के समाधान हेतु समाज के सभी कुरीतियों के बंधन को तोड़ते हुए आत्मशक्ति तथा उत्साह के साथ कुछ कर गुजरने के लिए उन्होंने अपने आप को मजबूत बनाया है। शिक्षा द्वारा ज्ञान ग्रहण करते हुए उन्होंने अपने अन्तर्मन को चोट करने वाली संवेदनाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से लिपिबद्ध कर दिया। उनकी कहानियों में सम्पूर्ण नारी संवेदनाओं को देखा गया है।

नारी संवेदना के विविध आयाम है, जिनमे वैदिककालीन, मध्यकालीन तथा आधुनिककालीन नारी संवेदनाओं, होने वाले परिवर्तन व रूढिवादिता की विविध समस्याओं से जूझती हुई नारी संवेदनाओं के विविध पक्षों को देखा गया है। आधुनिककालीन नारी में बदलाव व परिवर्तन, जागरूकता, आत्मविश्वास आदि के गुण हमें आज की नारी में देखने को मिलते हैं। आज की नारी पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली नारी उच्च स्तर पर पहुँच चुकी है। फिर भी समाज में होने वाली परिस्थितियों को सहते हुए उसका सामना करते हुए संघर्षरत दिखायी देती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी कहानी : एक नई दृष्टि, डॉ. इन्द्रनाथ मदान

2. आधुनिक हिन्दी कहानी, डॉ. धनंजय वर्मा

3. शब्द-शब्द मानुषगंध, संपा. वेदप्रकाश अमिताभ

4. हिन्दी कहानी का विवेचनात्मक अध्ययन, डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा

5 कहानी की संवेदनशीलता सिद्धान्त, डॉ. भगवानदास